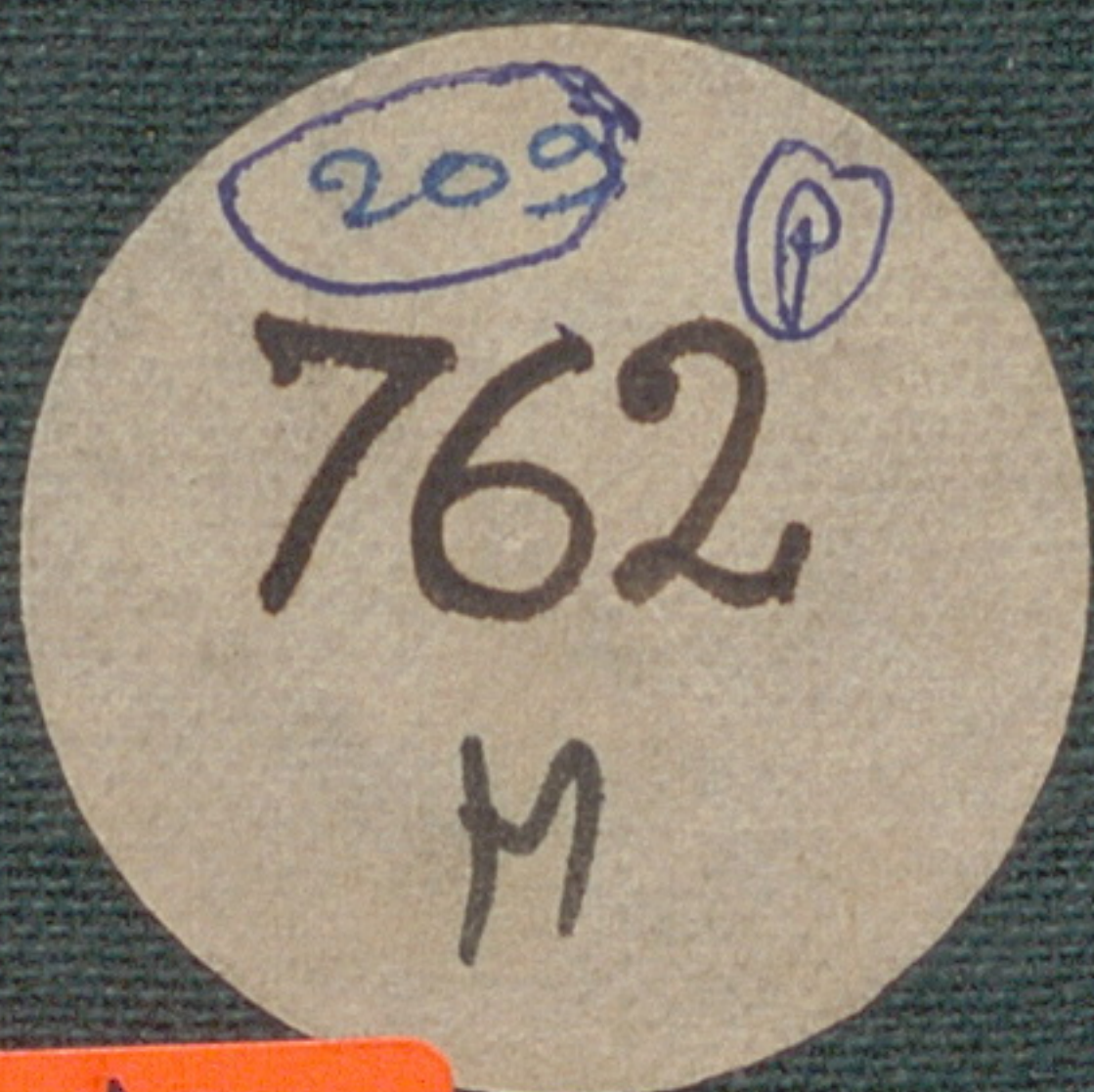




Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1170
10/21

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. _____

762

✓
2011



शहीद गर्जना



ॐ भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॐ

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा, भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।
 सदा शक्ति वरसाने वाला, प्रेम—सुधा सरसानेवाला ।
 वीरों को हरसानेवाला, मातृ-भूमि का तन मन सारा ॥
 स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बड़े जोश क्षण क्षण में ।
 काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय-संकट सारा ॥
 इस भण्डे के नीचे निर्भय, ले स्वराज यह अविचल निश्चय ।
 वो लो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ॥
 आओ प्यारे, वीरो!! आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ ।
 एक साथ सब मिलकर गाँओ, प्यारा भारत देश हमारा ॥
 इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे ।
 विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥



प्रकाशक—

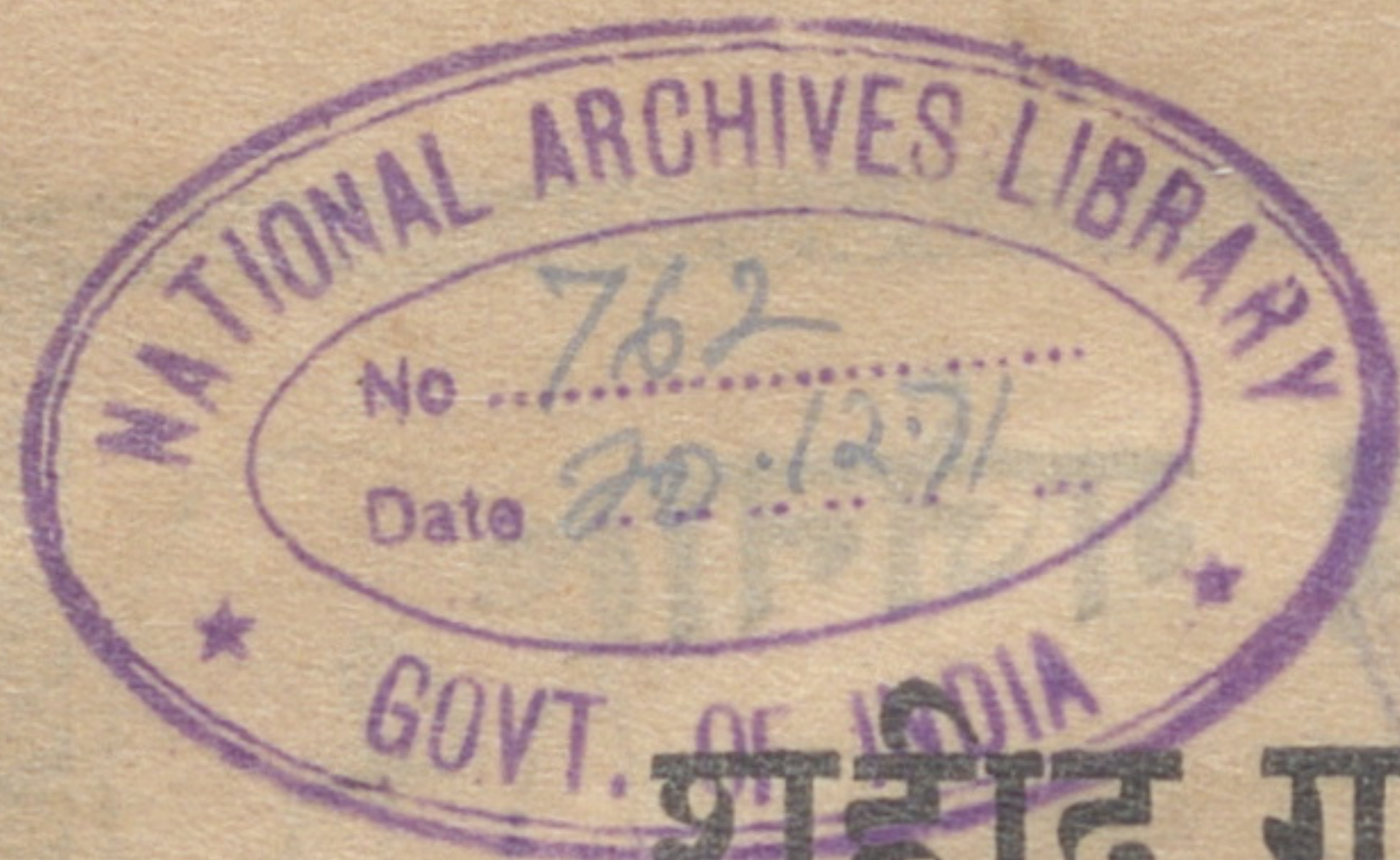
बेनीमाधो गुप्ता,
 इलाहाबाद ।

प्रथमवार]

१९३०

[मूल्य एक आना

सोल एजेंट—राधे लाल वर्मा, भारतीभवन इलाहाबाद



शहीद गर्जना

891.433
Sh335h



ईश्वर उपासना

मचा दो शान्ति क्रान्ति भगवान ।

क्रोध मय माया की मुसकान ॥

कष्ट कठिन चहुँ ओर मचाये सैनिक वृटिश जवान ।

त्राहि त्राहि कर व्यग्र पुकारत भारत दुखित महान ॥

धराधम-न्याय की हाँके' शान ।

कराते जुल्म बने अनजान ॥

डाकू चोर लुटेरे करते नित्य नये उत्पात ।

सज्जन पुरुषों पर होते हैं कठिन कुठाराघात ॥

हुवा है सभी नष्ट धन धाम ।

खो गया मान सकल सनमान ॥

सहन शक्ति सब नष्ट हो गई जान हुई बेजान ।

शेखी शान सभी तज दीनी किस पर करे गुमान ॥

सुना दो फिर मुरली की तान ।

मचा दो शान्ति क्रान्ति भगवान ।

भरडा

भरडा किसी तरह से हटाया न जायगा,

मैदा से पैर पीछे उठाया न जायगा ॥

भगडे की शान पर है मुन्हसिर हमारी जान,
 भगडा ये करके ऊँचा भुकाया न जायगा ॥
 दुश्मन के आगे सर ना भुकेगा किसी तरह,
 यह आसमाँ ज़मीं से मिलाया न जायगा ॥
 गुल्चीं को गर चमन से हटाया न जायगा,
 पत्ता भी हरा एक यहाँ पाया न जायगा ॥
 हुब्बे वतन का न कश जो दिल पे हमारे है,
 जुल्मो सितम हो लाख मिटाया न जायगा ॥
 सत्याग्रह का हिन्द में रोशन है जो चिराग,
 आँधी से दमन की ये बुझाया न जायगा ॥
 हम गोलियाँ मशीनगन को सीने पै लेंगे रोक,
 कितना सतायेगा कि सताया न जायगा ॥
 अब तक लुटा चुके हैं लुटोरों से अपना देश,
 अब जान बूझ कर तो लुटाया न जायगा ॥
 ज़ालिम ये चन्द रोज़ कि मेहमानी पर ये जुल्म,
 कुछ दिन में तेरा नाम भी पाया न जायगा ॥
 इतना सताया है हमें ज़ालिम के राज में,
 हम लाख भुलायेंगे भुलाया न जायगा ॥
 मशहर करीब है कि तुझे सबके सामने,
 शर्मिन्दगी से मुँह भी दिखाया न जायगा ॥



आज हमको काम कुछ करके दिखाना चाहिये ।
 कूद कर मैदान में थर थर मचाना चाहिये ॥
 कह दो ज़ालिमों से ये जाकर वो चलाये गोलियाँ ।
 गोलियाँ ये हैं नहीं हैं ये खूनी होलियाँ ॥

खेलनी है जा बजा अब नौ जवानी होलिया ।
 फैलती ही जा रही है हिन्द में यह होलिया ॥
 रङ्ग लायेगी यह खूँ और रङ्ग लायेगी यह आह ।
 फूँक कर रख देयगी तेरा आशयाना घास का ॥
 बिजली बन कर ये गिरेगी दामने दुश्मन पे यार ।
 उठ सभल जा होश कर न कर सितम अब जिनहार ॥
 वरना ये खूने शहीदा जोश में जब आयगा ।
 फिर पुराने जोश से चक्र में तुझको लायेगा ॥
 चन्द रोज़ा पलतनत पर न तू कर इतना गुरूर ।
 होश में आ होश की ले न मचा ज्यादा फ़ितूर ॥
 वरना फिर गुज़रा हुआ वो दौर आजाने को है ।
 तेरा यह नामा निशा मिट्टी में मिल जाने को है ॥

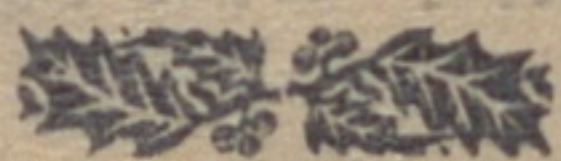


आज़ाद कर सकते नहीं हमको हुकूमत वाले ।
 जब कि हम भी न हो कुछ करके दिखाने वाले ॥
 दौरे दुनियाँ की यही चाल चली आती है ।
 पीसे जाते हैं सदा चैन से सोने वाले ॥
 मुँह से कह देना तो आसान है करना मुश्किल ।
 मरदेमैदा वहीं होंगे जो हैं बढ़ने वाले ॥
 आवो बिपदा को हरे देश पे जो है आई ।
 पीछे हट सकते नहीं खूँ के बहाने वाले ॥
 नौ जवानों का यही फ़र्ज हुआ करता है ।
 मिस्ले परवाना हो जा बाज कहाने वाले ॥

आवो हम भी दिखा जाये ज़माने को यही ।
 भक्तो दत्त दास से हैं मुल्क के मरने वाले ॥
 फ़र्ज तुझ पर भी यही आयद होता मङ्गल ।
 कौल अपने को निभा नजुम के बनाने वाले ॥

कातिल

क़त्ल ही करना मेरा कातिल अगर मंजूर है ।
 तेरा नाहक़ देर करना ना मुझे मंजूर है ॥
 इक क़लम इकबार से कर क़लम सिर को मेरे ।
 है मुझे राहत इसी में यह मेरा दस्तूर है ॥
 देश के खातिर अगर मेरी ज़रूरत पड़ गई ।
 जान तक दे दूँगा ज़ालिम अहद ये मंजूर है ॥
 यह तेरे कल कल के वादे अब सुने जाते नहीं ।
 नष्ट ही करना मिटाना अब तेरा मंजूर है ॥
 जेल की औ क़ैद की धमकी दिलाता है किसे ।
 आजमा कर देख ले गर इमतिहाँ मंजूर है ॥
 मिट नहीं सकते इरादे आशक़ाने दार के ।
 सच बता दे फितनेगर अब क्या तुझे मंजूर है ॥
 हमने तो सीखा है मरना मरने से डरते हैं कब ।
 आशक़ाने हुरियत को यही अब मंजूर है ॥
 ये शहीदों की है आह ये है नग़मे दास के ।
 ख़ाली जा सकते नहीं हक़ को अगर मंजूर है ॥
 बाग़ियों का जो गिरोह पैदा किया तूने खुद ।
 ग़दर फिर उनको मचाना हिन्द में मंजूर है ॥
 आ रही है हर तरफ़ से अब सदा ये इन क़लाब ।
 उा बचा कर भाग जा जीना अगर मंजूर है ॥



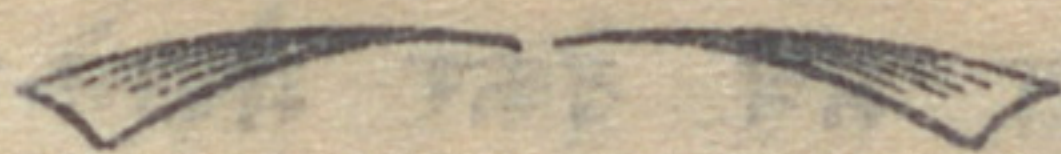
भंडा न नीचे झुकाना

प्राण मित्रो भले ही गँधाना, पर न भंडा ये नीचे झुकाना
 तिनरंगा है भंडा हमारा, बीच चर्खा चमकता सितारा
 शान ये ही है इज्जत हमारी सिर झुकाती इसे हिन्द सारी
 इस पै सब कुछ खुशी से चढ़ाना पर न भंडा
 यह है अज़ादपन की निशानी, इसके पीछे हैं लाखों कहानी
 जिन्दादिल ही हैं इसको उठाते-मर्द इस घर हैं सर तक कटाते
 तुम भी लाखों मुसीबत उठाना पर न भंडा
 रे क्या भूले हो जलियान वाला या आडायर का इतिहास काला
 गोलियों की लगी जब झड़ी थी नींव आज़ादी की तब पड़ी थी
 याद हो गर वो खूँ में नहाना तो न वीगे ये भंडा झुकाना
 उसने तो था न क्या जुलम ढाया पेट के बल पै हमको चलाया
 कोसों बच्चों को पैदल भगाया माँ औ बहिनों को घर घर रुलाया
 याद होगा तुम्हें वो फिसाना तो न मित्रो ये पर न भंडा
 और अब ही न क्या हो रहा है कौन सुख नींद में सो रहा है
 लाखों पाते न भर पेट खाना, सत्य बोली तो है जेलखाना
 प्राण मित्रो भले ही गँधाना पर न भंडा
 कुछ हो ये मुल्क आज़ाद होगा उजड़ा गुल न ये आबाद होगा
 भंडा ये हर क़िले पै चढ़ेगा, इसका दल रोज़ दूना बढ़ेगा
 इस से ही है छिड़ा ये तराना होना आज़ाद या मिट ही जाना
 पर न भंडा
 तीर और तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे
 सब कहेंगे ये सिर है कटाना पर न भंडा
 शान्ति हथियार होंगे हमारे पर वे काटेंगे अरि के दुधारे
 बस भला हो जो अंग्रेज़ जागें लोभ हिन्दी हुकूमत का त्यागें

हे प्रभो शक्ति दो धीर हों हम टेक रखें ये सर्वस्व खो हम
हम ही क्या कह उठे सब ज़माना दूध देखो न माँ का लजाना
.....प्राण

शान्ती

कौन कहता है न होगी पार किशती हिन्द की ।
ना खुदा गांधी सा हमको जब मुयमर हो गया ।
चल पड़ा है सूबे डाडी ले के फौज शान्ती ।
हर कदम पर गा रहा है शान्ती ही शान्ती ॥
शान्ती ही राग उसका शान्ती ही आन है ।
शान्ती का है वो पुतला है मुजसम शान्ती ॥
सलिये अगलब नहीं है कि दिला दे शान्ती ।
शान्ती ही को समझता शान है औ मान है ॥
शान्ती ही को समझता राज औ अस्थान है ।
शान्ती का देवता है शान्ती का आशना ॥
शान्ती से ले रहा है ज़ालिमों का इनतिहा ।
इसलिये ही शान्ती है उस पै इतनी मेहरवाँ ।
गुन जो उसके गा रहा है हर तरफ़ सारा जहान ॥



तू और मैं

तू मतवाला निज सत्ता का, मैं स्वदेश दीवाना हूँ
तू हशु बल-चूर और मैं, आत्मिक बल गर्वीला हूँ

दीन सताना तुझे सुहाता, पर दुख हरना धुनि मेरी ।
 छोड़ स्वत्व पद दलित बनाना, निर्बल को आदत तेरी ॥
 बन्धन मुक्त करूंगा मैं ले, जंग छिड़े मेरी तेरी ।
 आज्ञा सन्मुख यही चुनौती, वजने दे रण की मेरी ॥
 रक्त-पिपासी तीर, तोप से, करना युद्ध पसन्द तुझे ।
 असहयोग, सत्याग्रह रण में दो ही प्यारे अस्त्र तुझे ॥
 पूर्ण अहिंसक ब्रह्म अस्त्र ये लग काँपे इनके मारे ।
 कब तक रण में ठहरेगा तू कनक-कशिप से जब हारे ॥
 भारत स्वच्छ गगन-मण्डल में विजयी झण्डा फहरेगा ।
 आत्मिक बल के आगे देखे पशु बल कब तक ठहरेगा ॥

—खूबीराम लवानिया

नौ जवानों

भारत के नौजवानों, मैदाने जंग आओ ।
 वन देश प्रेमी अपना, जीवन सफल बनाओ ॥
 वे वीर त्यागी अपना, कर्तव्य कर रहे हैं ।
 है राह उनकी सीधी, उस पर कदम बढ़ाओ ॥
 हैं कौन शक्ति ऐसी, जो तुमको रोक लेगी ।
 गर एक साथ होकर, बल अपना तुम दिखाओ ॥
 ले संग सूत्र सयम भारत को उसमें बाधो ।
 फिर क्रान्ति मंत्र देकर मैदाने जंग आवो ॥
 भय त्याग दो अभय बन, स्वातन्त्र जंग छेड़ो ।
 भू माँ को अपनी वीरो, बन्धन से तुम छुड़ाओ ॥

रक्षा बन्धन

प्राण वीरों भले ही गँवाना, पर न राखी की इज्जत घटाना ।

यह जो राखी तिरङ्गी हमारी, करती इज्जत इसे हिन्द सारी ॥

भाई इसको न हरगिज़ लजाना, चाहे जाना पड़े जेल खाना ।

प्राण...

हम न भूले हैं जलियान वाला, जहाँ पे डायर से आया पाला ॥

पेट के बल था उसने रेंगाया, देश की लाज में बहा आया ।

अबकी ऐसा न आये ज़माना, चाहे जाना पड़े जेल खाना ॥

प्राण...

है वह स्वराज्य नंदिर हमारा, जहाँ पै बैठा हैं गाँधी सितारा ।

वहाँ पर पहुँचे हैं हाज़ारों भाई, और वहिनो कि भी माँग आई ॥

अब तो वहीं है सब का ठिकाना, आओ सारे चले जेलखाना ।

प्राण...

याद रखना पेशावर की गोली, खेलना हिन्द में वही ही होली ॥

जिससे माथा हो ऊँचा हमारा; और आज़ाद हो हिन्द हमारा ।

बात अपनी न नीची कराना, चाहे जाना पड़े जेलखाना ॥

प्राण...

दक्षिणा बस यही है तुम्हारी, लाज राखी की रखना हमारी ।

चाहे डण्डे पड़े तुमको खाना, पैर हरगिज़ न पीछे हटाना ॥

या तो गोली को सीने पे खाना, या कि सीधे चलो जेलखाना ।

प्राण...

[विश्वामित्र]



जेल यात्रा

खुद जेल में जाकर बता दिया, स्व-राज्य का मंदिर जेल में है ।
 सिवा जेल के रस्ता कौन सा है, जब देश का लीडर जेल में है ॥
 बेकाम हो तुम, नाकाम हो तुम, बदनाम हो तुम वो गुलाम हो तुम
 हैं गुलाम ही रहते कालिज (बंगलों) में आज़ाद का घर तो जेल में है
 सुख भोग तजो भाई अब तो, संग्राम छिड़ा आज़ादी का ।
 हैं गुलाम ही सोते गहों (मखमल) में जब देश का नेता जेल में है
 है शेर वबर भारत का अब ज़िन्दाने फरंग के पिजरे में ।
 लो लाठी गोली सीने में, जब भाई (लाल) जवाहर जेल में है ॥

वन्देमातरम्

कृष्ण के बाँके बिहारी अर्ज सुन लो जो मेरी ।
 तुम भी अपनी बाँसुरी से कह दे वन्देमातरम् ॥
 थी मना है बोलने की बुलबुले नाशाद को ।
 आज उड़ कर गा रही है वह भी वन्देमातरम् ॥
 फ़क़त है तेरा सहारा तू हमारा है प्रभू ।
 उजड़ी भारत को बसा ले कह दे वन्देमातरम् ॥
 जिंदा बाद ऐ इन कलाब ना जिंदा बाद ऐ मरदुमी ।
 भक्तो दत्त औ दास ने सिखलाया वन्देमातरम् ॥
 नगमये तौहीद का डका बजा दे हिन्द में ।
 चक्र सुदर्शन चला दे कह दे वन्देमातरम् ॥
 फिर से आये हिन्द में गुजरा हुवा सतयुग का दौर ।
 ताकि आज़ादी से गाये मिल के वन्देमातरम् ॥



आजादी

आबरू पै वतन की हम सब फिदा हो जायेंगे ।
 देख लेना कांग्रेस पर हर तरह मिट जायेंगे ॥
 हासिल आजादी करैंगे जिस तरह भी हो सके ।
 देखलाने दास के नक्शे कदम हो जायेंगे ॥
 क्यों जुल्म है कर रहा हमको निहत्ते जान कर ।
 गर बिगड़ बैठे तो फिर हम एक बला हो जायेंगे ॥
 माल की होगी ज़रूरत तो लुटा देंगे जौहर ।
 मुल्क की मिल्लत के लिये हम सब गढ़ा हो गायेंगे ॥
 इक नये इमदाद से किशती चलेगी हिंद की ।
 और जवाहर लाल नेहरू ना खुदा हो जायेंगे ॥
 अन्दलीवाने चमन लो फिर बहार आने का है ।
 आज जो आजिज हैं वो कल क्या से क्या हो जायेंगे ॥

व्यग्र अभिलाषायें

धीरे धीरे सर्वनाश की गौरव रचना रच जाये ।
 आग लगे इस अखिल विश्व में धुन्ना धार फिर मच जाये ॥
 नाशक शाशक शह में साम्राजों के सिंहसन डोले ।
 हटें गदिया लुटे खजाने चिर बन्दी बन्धन खोलें ॥
 अत्याचार भार भूका हो फैले ऐसी अमिट अशान्ति ।
 भ्रान्ति दूर हो उथल पुथल हो क्रान्ति क्रान्ति हो भीषण क्रान्ति
 अस्त्र शस्त्र सब चले निर्बलों पर बर्छी और भाले हों ।
 ऐसा घमासान ही वीरों को प्राणों के लाले हों ॥

धन सत्ता की मान महत्ता मिट्टी में मिल कर रोवे ।
 पश्चाताप करें पापों का पीड़ित समराज्य होवे ॥
 मचै रक्त की कीच भक्तगण भ्रम का भेद भाव भूलै ।
 नवजवान फासी के तख्तों पर सादर हँस हँस भूलै ॥
 बलिदानों का ढेर देख बलिबेदी ज्वाला खिल जावे ।
 हो ऐसी हुकार द्रोहियों के दल का दल हिल जावे ॥
 उड़ै पताका सम्यवाद की अवनति का पथ खाली हो
 फूली फली पल्लवति इस उपवन की डाली डाली हो ॥
 मिटे अनीति नीति की जय हो दया धर्म का हो संचार ।
 पर्दा करे खुल पड़े महसर वन्द स्वर्ग के सुन्दर द्वार ॥

क्या हमारे दिल में है

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
 देखना अब ज़ोर कितना बाजुये कातिल में है ॥
 रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
 लज्जते सहरानवर्दी दूरये मंज़िल में है ॥
 वक्त आने दे बता देंगे तुम्हें ऐ आसमा !
 हम अभी से क्या बतायेँ क्या हमारे दिल में है ।
 आज फिर मक़तल में कातिल कर रहा है बार बार
 क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥
 ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार ।
 अब तेरी हिम्मत की चरचा गैर की महफ़िल में है
 अब न अगले चलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
 सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अबदिले बिस्मिल में है ॥

आलम

स्वतन्त्रा की जङ्ग छिड़ी आज़ादी का अब गाना है ।
 भारत के कोने में अब होता यही तराना है ॥
 इधर और हिन्द जवाहर आज़ादी का दिवाना है ।
 उधर गुजराती वीर बहादुर खड़ा हुवा मरदाना है ॥
 बासठ वर्ष बोल बूढ़े में आ गया जोश पुराना है ।
 आलम कहता है महात्मा बड़ा वीर मरदाना है ॥
 खोई हुई भारत की इज्जत अब हम सब ने जानी है ।
 दूर, गुलामी को करने की बस दिल में ही ठानी है ॥
 आवेताब से चमक उठी शान्ती की तलवार पुरानी है ।
 आज़ाद इससे हो भारत यह उजड़ी हुई निशानी है ॥
 देश सेवकों का माता को बस यही एक नज़राना है ॥

आलम...

विदेशी शासन का बाइसराय दिल अपने में घबराया है ।
 गिरफ़्तार देश भक्तों को रातो रात कराया है ॥
 अक़ल बिगड़ गई है उसकी आँखों में पड़ती छाया है ।
 कितना को ही कैद किया औ बहुतों को पिटाया है ।
 कौमी सेवकों के नाम उसने जारी किया परवाना है ॥

आलम...

स्त्रियों में दी आग फूँक यह देहली में सुलगाई है
 आगरा होकर लखनऊ पहुँची मेदनीपुर में छाई है
 सगही वाली पद्मावती ने अपना कथा सुनाई है
 गुप्त इन्द्रियों में डंडे करवाये यों बेइज्जती कराई है
 डूब मरो इनसाफ़ के कुत्तों क्या यही शर्म का बाना है

आलम...

देवी मैनावती को बोलो किसने ज़िन्दा जलवाया था
 इकली रानी भाँसी पर किसने हमला करवाया था
 नाना बाजी राव पेशवा को किसने मारवाया था
 ज़.ख़मी कमरसिंह पर किसने हाथ साफ़ करवाया था
 लुचाब जो कुछ देखा है हमने वही तुम्हें सुनाना है

आलम...

गुलाम खाना

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलामख़ाना,
 आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना ।
 खूँ खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का,
 कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना ॥
 कौमी तिरंगे झण्डे पर जाँ निसार अपनी,
 हिन्दू, मसीह, मुसलिम गाते हैं यह तराना ।
 अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे,
 इस परत हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
 परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारी,
 एक खेल हो रहा है फाँसी पर भूल जाना ।
 भारत वतन हमारा भारत के हैं हम वच्चे,
 भारत के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

दमन का दिवाला

दिवाला शीघ्र निकलेगा अरे थोथे दमन तेरा ।
 खिजाँ से खूब उजड़ेगा अरे ज़ालिम चमन तेरा ॥
 सताले और थोड़े दिन सेवेदिल बेगुनाहों को ।
 यहाँ से शीघ्र ही होगा अरे गर्वी गमन तेरा ॥
 हमें लाचार कर तूने भुकाया खूब चरणों में ।
 हमों विपरीत अब इसके विसारेंगे नमक तेरा ॥

अरे कायर निहत्थों को रेंगाया पेट के बल क्यों ।

लखेंगे शीघ्र ही हम भी अरे पापी पतन तेरा ॥

बहुत अब कर चुका शासन यहाँ से अब उठा आसन ।

हमारा देश है भारत नहीं है यह वतन तेरा ॥

दबाले और थोड़े दिन दमनकारी तू दुखियों को ।

निहत्थे निर्वलों की आह से होगा निर्धन तेरा ॥

दमन से रह नहीं सकता कभी भी यह अमन कायम ।

करेगा यह दमन ही अन्त में निश्चय शमन तेरा ॥

मिलेगी आत्मबल को जय दमन तेरे पशु बल पर ।

चकित संसार देखेगा मिटेगा जब वतन तेरा ॥

असहयोग

तबदील गवर्नमेण्ट की रफ़्तार न होगी ।

गर क़ौम असहयोग पै तैयार न होगी ॥

बन जायेंगे हर शहर में जलयाँन वाले बाग़ ।

इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ।

दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे ।

इन हाथों में बन्दूक औ तलवार न होगी ॥

यह जेलखाने टूट के कुछ और बनेंगे ।

इनमें तमाम क़ौम गिरफ़्तार न होगी ॥

वह कौन असाँरे वतन होगा भला जिसपर ।

हँस हँस के फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥

सौदाई हैं हम को दो लोहे की बेड़ियाँ ।

सोने के ज़ेवरों में यह झुंकार न होगी ॥

जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम ।

खेती वतन की दास्तो तैयार न होगी ॥

हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे अब ज़रूर ।

ग़म में जो हमारे कभी ग़मख़वार न होगी ॥

राजद्रोह

क्यों यह राज हमें हो प्यारा ।

राजद्रोह है धर्म हमारा ॥

स्वतन्त्रा से बचित करके मालिक हुये गुट इस घरके ।

लूट रहे हमको जी भरके सुख सम्पति अन्न धन हरके ॥

खून चूस कर पनप रहा जो ।

क्यों यह राज हमें हो प्यारा ॥

राजद्रोह है धर्म हमारा ।

ज़ालिम हत्याकाण्ड रचाया नाको बल हमको खिचलाया ।

गुरु बाग़ में क़त्ल कराया स्त्री बच्चों को पिटवाया ॥

शहर पेशावर में बम बरसाया ।

क्यों यह राज हमें हो प्यारा ।

राजद्रोह है धर्म हमारा ।

उफ़ पञ्जाब केसरीको लाठी से मारा जवाहर को डंडों पिटवाया ।

शोलापुर का यह पशुताप मार्शल्ला का कटु दिग्ग्य दर्शन ॥

क्यों यह राज हमें हो प्यारा ।

राजद्रोह है धर्म हमारा ॥

हाय लखनऊ में अबलाओं पर क्या क्या अत्याचार गुज़ारा ।

अबलाओं की लज्जा हरना गुप्तगों की दुर्गति करना ॥

यह अश्लील असभ्य दिग्ग्यदर्शन जिसे देख लजित पशुतापन ।

नर पिशाच गुण्डे पशु सासक पापी राज्य पतित हत्यारा ॥

अब स्वराज्य लेकर छोड़ेंगे अन्याई का मुख मोड़ेंगे ।

मर जाये परवाह नहीं है पतित राज की चाह नहीं है ॥

देख देख अन्याय जुल्म अब खौल उठा है रक्त हमारा ॥

मुद्रक—रामअधार यादव, यूनियन जाब प्रेस, कटरा, प्रयाग ।